Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

शिक्षा ही नहीं विद्या भी

✹ ✹

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

✹ ✹

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अपरिवर्तित संस्करण २००६

मूल्य ४.०० रु.

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परिवर्तन की पुकार और गुहार

एक भाषा-भाषी क्षेत्र का निवासी यदि दूसरी भाषा बोलने वाले क्षेत्र में बसने जाए, तो सर्वप्रथम उसे उस नये क्षेत्र की भाषा का अभ्यास करना पड़ेगा। वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज, विचार, संस्कृति आदि से परिचित होने की आवश्यकता पड़ेगी। यदि इस सीखने-जानने में उपेक्षा बरती जाए, तो पग-पग पर गूँगे, बहरे, अजनबी की तरह परेशान होना पड़ेगा। ईसाई पादरी प्रायः योरोपीय देशों से आते हैं। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए वे एशिया-अफ्रीका आदि महाद्वीपों में जाकर बसते हैं और प्रमुख रूप से पिछड़े इलाकों को अपना कार्य क्षेत्र चुनते हैं। इससे पूर्व उन्हें वहाँ की भाषा, संस्कृति, समस्या आदि से परिचित होना पड़ता है, साथ ही यह भी जानना होता है कि उनके साथ किस प्रकार घुला-मिला जा सकता है। यदि इस प्रक्रिया को न अपनाया जाए और किसी भी पादरी को वहाँ भेज दिया जाए, तो वह उस अपरिचित स्थिति में कोई सफलता अर्जित न कर सकेगा।

इक्कीसवीं सदी एक प्रकार से ऐसी परिस्थितियों वाली अवधि या परिधि है, जिसमें प्रवेश करने वालों को पुरानी आदतें भुलानी और नए सिरे से नई जानकारियाँ अर्जित करके व्यवहार में उतारनी पड़ेगी। इसके बिना गाड़ी एक भी कदम आगे न चल सकेगी।

युग परिवर्तन में मनुष्यों की आकृति तो अब जैसी ही रहेगी, पर उनकी प्रकृति बदल जाएगी। प्रकृति से यहाँ तात्पर्य—मान्यता, भावना, विचारणा, इच्छा और गतिविधियों का समुच्चय है। यों प्रकृति शब्द संसार को गतिशील रखने वाले प्रवाह को भी कहते हैं; पर यहाँ तात्पर्य मात्र गुण, कर्म, स्वभाव से है। परिवर्तन इन्हीं में होना है। उज्ज्वल भविष्य की संभावना वाली भवितव्यता पूरी तरह इसी केंद्र-बिंदु पर निर्भर है। इसलिए भावी परिवर्तन की चर्चा करने वाले प्रायः यही कहते हैं कि अगले दिनों सर्व साधारण की न सही,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विचारवानों की प्रकृति तो लगभग इतनी बदल जाएगी, जिसे आमूलचूल हेर-फेर के रूप में देखा जा सके।

इन दिनों प्रस्तुत असंख्य विपत्तियों का सबसे बड़ा निमित्त कारण एक ही है कि मनुष्य अदूरदर्शिता की व्याधि से ग्रस्त है। उसे लगता है कि तात्कालिक रसास्वादन को ही सब कुछ मान लिया जाए। जो कुछ सोचा या किया जाए, उसे अपने आपे तक ही सीमित रखा जाए। बहुत हुआ तो उन्हें भी कुछ सहारा दे दिया जाए, जिनसे लाभ मिलता है या मिलने वाला है। इसके अतिरिक्त जो भी प्राणी या पदार्थ संसार में शेष रहते हैं, उनका दोहन किया जाए। वैसा न बन पड़े, तो उपेक्षित छोड़ दिया जाए। अन्यान्यों के प्रति भी अपना कुछ कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व है, इसे समझने या क्रियान्वित करने की अभिरुचि एक प्रकार से समाप्त जैसी ही हो गई है। योजनाएँ बनाने और प्रयास करने के लिए एकमात्र स्वार्थपरता ही शेष रहती है। परमार्थ तो मात्र मनोविनोद जैसी चर्चा का विषय रह जाता है। बहुत हुआ तो आत्म विज्ञापन के लिए उदारचेता होने का ढिंढोरा पिटवा कर अपनी मलीनता पर तनिक सी पॉलिश पोत ली।

आज की मान्यता यही है। इसी आधार पर सोचा-विचारा जाता है और जो कुछ करना होता है, उसका ताना-बाना बुना जाता है। फलतः वही बन पड़ता है जिसे मानवी गरिमा के सर्वथा प्रतिकूल कहा जा सके। आत्म केंद्रित स्वार्थ परायण व्यक्ति, क्रमशः इतना निष्ठुर और कृपण हो जाता है कि अपनी उपलब्धियों में से राई-रत्ती भी सत्प्रयोजनों के लिए लगाने का मन नहीं करता। निष्ठुरता इतनी बढ़ जाती है कि दूसरों की पीड़ा एवं पतनोन्मुख स्थिति में सहारा देने के लिए राई-रत्ती उत्साह भी नहीं उभरता। लोक लाज की विवशता से यदाकदा कभी ऐसा कुछ करना पड़े, तो उसके बदले भी सस्ती वाहवाही को अपेक्षाकृत कहीं अधिक मात्रा में लूट लेने का उद्देश्य रहता है। जिससे बदला मिलने की आशा रहती है, उसी के साथ सद्व्यवहार का, सहायता का हाथ उठता है। यही है वह मौलिक दुष्प्रवृत्ति, जिसने असंख्यों छल प्रपंचों, अपराधों और अनर्थों [illegible] दिया है। बढ़ते-बढ़ते वह स्थिति अब इस स्तर तक पहुँच

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गई है कि हर किसी को अपनी छाया तक से डर लगने लगा है। लोकहित का ढिंढोरा पीटने वालों के प्रति सहज आशंका बनी रहती है कि कहीं कुछ सर्वनाशी अनर्थ का सरंजाम तो खड़ा नहीं कर दिया है।

सेवा-सहायता की आशा मूर्धन्यों से की जानी चाहिए, पर उनके प्रति और भी अधिक गहरा अविश्वास अपना परिचय देता है। प्रदूषण उगलकर हवा में जहर छोड़ते रहने वाले उद्योगपति यों अभावग्रस्तों के लिए प्रचुर परिमाण में सुविधा-साधन उत्पन्न करने की दुहाई देते है, पर वह संभावना पर्दे की ओट में छिपा दी जाती है, जिसके कारण विषैली साँस लेने के कारण असंख्यों को दुर्बलता और रुग्णता के शिकार बनकर घुट-घुट कर मरना पड़ता है। यही लोग हैं जो पेय जल में विषाक्त रसायन घोलते और पीने वाले के लिए अकाल मृत्यु का संकट उत्पन्न करते हैं। बड़े उद्योगों के कारण कितने छोटे श्रम-जीवियों को बेकार-बेरोजगार रहना पड़ता है; उसके विरुद्ध कोई मुँह भी नहीं खोल पाता।

गुंडागर्दी इसलिए दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ती है कि उनका संगठित प्रतिरोध कर सकने की साहसिकता लगभग समाप्त हो गई है। मार्गदर्शन की, धर्मोपदेश की जिम्मेदारी जिन लोगों पर है, वे मात्र परावलंबन का-भाग्यवाद का प्रतिपादन करते हैं। शौर्य-साहस जगाने में उनका दूर का भी वास्ता नहीं रहता। परावलंबन के पक्षधर उथले धर्मकांड भर सिखाने की उनकी रीति-नीति चलती रहती है। जब इतने भर से उन्हें प्रचुर परिमाण में सम्मान सहित सुविधा-साधन मिल जाते हैं, तो उस विवेकशीलता को क्यों जगाएँ, जो समर्थ होने पर उल्टी उन्हीं के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर सकती है। कला ने कामुकता का बाना ओढ़कर अपने को अधिक लोकप्रिय बनाने का मार्ग चुना है। संपन्नता ऐसे उत्पादन करने में लगी है, जिनमें सर्वसाधारण को आकर्षक चकाचौंध तो दिख पड़ती है, पर अंततः अहित के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता। जब मूर्धन्यों का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कितने गहरे गर्त में गिरना पड़ेगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

संक्षेप में यही है आज के प्रचलन की बानगी। नशेबाजी से लेकर बहु प्रजनन तक के कुप्रचलन इसी परिधि में आते हैं। पर्दा प्रथा, जातिगत ऊँच-नीच, मृतक भोज, दुर्व्यसन एवं अपराध इसी संकीर्ण-स्वार्थपरता की सड़ी कीचड़ में पनपे हुए हैं, जिनके कारण हर किसी को दु:खी होकर समग्र परिवर्तन का आह्वान करना पड़ रहा है। बात सही भी है। विष वृक्ष की जड़ें कटें, तो ही उन फलों का उत्पादन रुके, जो व्यथा-वेदनाओं की भरमार करने में ही काम आते हैं।

आज दसों दिशाएँ एक स्वर से किसी बड़े परिवर्तन की पुकार और गुहार मचा रही है। नियंता ने आश्वासन दिया है कि अगली एक शताब्दी के भीतर महाविनाश का विस्तार समेट लिया जाएगा और उज्ज्वल भविष्य का वातावरण बनेगा। इस परिवर्तन के लिए कुछ ऐसी ही तैयारी करनी होगी जैसे, एक भाषा के जानकार को किसी अन्य भाषाई क्षेत्र में काम करने भेजा जाए। छोटे प्रशिक्षण तक जब निष्णात प्रशिक्षकों की माँग करते हैं, तो युग परिवर्तन के लिए तो ऐसे महाशिल्पी चाहिए, जो नए युग और नए वातावरण का सृजन कर सके।

□□

सृजन विद्या के प्राध्यापक चाहिए

'नव सृजन योजना' महाकाल की योजना है। वह पूरी तो होनी ही है। उस परिवर्तन का आधार बनेगा चरित्रनिष्ठ, भाव-संवेदना युक्त व्यक्तित्वों से। ऐसे व्यक्तित्व बनाना विद्या का काम है, मात्र शिक्षा उसके लिए पर्याप्त नहीं। मात्र शिक्षा-साक्षरता तो मनुष्य को निपट

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अस्तु, नवयुग के अनुरूप मनःस्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए बड़ी संख्या में ऐसे प्राध्यापकों की आवश्यकता अनुभव हो रही है, जिनकी शिक्षा भले ही सामान्य हो, पर वे अपने चुंबकीय व्यक्तित्व और चरित्र से निकटवर्ती क्षेत्र को अपनी विशिष्टताओं से भर देने की विद्या के धनी हों।

नाविक के लिए आवश्यक नहीं कि उसके पास स्नातकोत्तर परीक्षा पास करने का प्रमाण पत्र हो ही। मजबूत कलाई और चौड़े सीने वाला हिम्मत के सहारे उफनती नदी की छाती पर दनदनाता हुआ दौड़ता रहता है। अपने को, अपने निकट वालों को-नाव पर बैठी हुई सवारियों को इस पार से उस पार पहुँचाने में उसे देर नहीं लगती; वरन् हिम्मत और सफलता को देखते हुए गर्व-गौरव अनुभव करता है।

विद्वान, मनीषी और मूर्धन्य सर्वत्र सम्मान पाते हैं। उनकी गरिमा और उपयोगिता से कोई इनकार नहीं कर रहा है, वरन् कहा यह भर जा रहा है कि ईमान और भगवान को भुला देने वाले आज के समुदाय को ऐसे उद्धारक चाहिए, जो गहरी कीचड़ में फँसे जानवरों को खींच घसीट कर किनारे तक पहुँचा देने की साहसिकता का परिचय दे सकें।

अगले दिनों नव-युग का आगमन आँधी तूफान की तरह दौड़ता चला आ रहा है। उसमें होगा तो प्रथा प्रचलनों का परिवर्तन भी, पर सबसे प्रमुख एवं मौलिक परिवर्तन एक ही होगा कि मनुष्य को इक्कड़ बनकर नहीं रहने दिया जाएगा। जंगली जानवरों में कभी-कभी झुंड को छोड़कर कोई उद्दंड अकेले रहने लगता है। वह सामूहिकता की रीति-नीति भूल जाता है और बगावत पर उतर आता है। किसी पर भी आँखें बंद करके हमला बोल देता है। उसे 'इक्कड़' कहते हैं।

इक्कड़ मनुष्य, जिसके ऊपर संकीर्ण स्वार्थपरता का प्रेत-पिशाच हर समय चढ़ा रहता है, उसे हर किसी के लिए खतरनाक ही

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संकीर्ण स्वार्थपरता ही है। आज की अगणित विडंबनाओं, विभीषिकाओं का यदि एकमात्र कारण ढूँढ़ना हो तो उसे एक ही रूप में मापा जा सकता है—तृष्णा और अहमन्यता। यदि इसमें कटौती की जा सके, तो समझना चाहिए कि सिर पर लदा चट्टान जैसा भारी बोझ हल्का हुआ और मानवी गरिमा के अनुरूप प्रगति कर सकने का पथ प्रशस्त हुआ।

मनुष्य की संरचना इस प्रकार हुई है कि वह दो मुट्ठी अनाज और दो गज कपड़े के सहारे मजे में गुजारा कर सकता है। इतना जुटाने में उसका दो घंटे का श्रम-समय पर्याप्त होना चाहिए। यह सुविधा सृष्टि के अन्य किसी प्राणी को उपलब्ध नहीं है। उन्हें दिन भर पेट भरने का जुगाड़ बिठाने में दौड़ना पड़ता है। सुरक्षा की दृष्टि से भी उन्हें भयभीत रहना पड़ता है; पर मनुष्य के सामने ऐसी कोई समस्या नहीं है। निजी निर्वाह के अतिरिक्त जो कुछ उसके पास बच जाता है, वह आवश्यकता पूर्ति के अतिरिक्त सैकड़ों हजारों गुना अधिक है। इस बचत को पुण्य-परमार्थ के लिए नियोजित करके ही संसार के विवेकवानों ने देव मानव का स्तर पाया है, अपना भला किया है और असंख्यों को अपने कंधों पर बिठाकर पार उतारने का श्रेय संपादित किया है।

यदि इतनी मोटी बात किसी की भाव-चेतना में प्रवेश कर सके, व्यवहार में उतर सके तो समझना चाहिए कि उसे देव-मानव बनने का सौभाग्य हस्तगत हो गया। उसे अवांछनीयता के प्रवाह-वातावरण को बदलने का अकूत बल उपलब्ध हो गया। अन्यथा सड़न से उत्पन्न होने वाले विष कीटकों द्वारा सर्वत्र गंदगी फैलाने का खतरा सामने खड़ा ही रहेगा।

नव-युग में शिक्षा-साक्षरता तो बढ़ती ही रहेगी। व्यक्ति समाज और सरकार ने उसे मान्यता दे दी है, फिर वह बढ़ेगी क्यों नहीं ? कुछ ही दिन में निरक्षरता की कालिख से सभी लोग अपना मुँह धोकर साफ कर लेंगे। प्रश्न विद्या का है। उसका न कहीं महत्त्व समझा जा रहा है और न कोई आवश्यकता ही। मानवी गरिमा को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और दूरदर्शी विवेकशीलता को बढ़ाने-अपनाने के लिए कहीं ऐसे प्रयत्न नहीं चल रहे हैं, जिन्हें आशा भरी दृष्टि से देखा और संतोषजनक कहा जा सके।

इस आवश्यकता की पूर्ति युग सृजेताओं को करनी पड़ेगी। आशा की गई है कि वे शांतिकुंज परिवार से निकलेंगे और अपने महान व्यक्तित्व और कर्तृत्व से समूचे वातावरण में नव जीवन का संचार करेंगे। ऐसे श्रेयाधिकारियों को अभ्युदय की दिशा में दो कदम अनिवार्य रूप से उठाने पड़ेंगे; एक निजी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को घटाना, इसे संयम कह सकते हैं, दूसरा विद्या-विस्तार के लिए तडपन भरा पुरुषार्थ उभारना, इसे सेवा-साधना कह सकते हैं।

प्रथम चरण में औसत नागरिक के निर्वाह की कसौटी पर स्वयं को खरा सिद्ध करना होगा। यहाँ अधिक उत्पादन पर रोक नहीं है; पर निजी खर्चों में इतनी अधिक कटौती करनी चाहिए कि उसे तपस्वी जीवन न सही, सादा जीवन उच्च-विचार स्तर का तो समझा ही जा सके।

इतना पहला कदम उठा लेगा वह अनुभव करेगा कि उसके पास जो समय, श्रम, कौशल, मनोयोग ही नहीं, साधनों का भी इतना बाहुल्य है कि समय की महती पुकार को पूरा करने के लिए युग देवता के चरणों पर श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत करते हुए असंख्यों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

इस संदर्भ में न तो उच्च शिक्षा की आवश्यकता है और न विपुल सपन्नता की। उस चतुरता की भी आवश्यकता नहीं है जो लंबे चौड़े भाषण देकर लोगों को बहका तो लेती है, पर निजी व्यक्तित्व खोखला होने के कारण प्रभाव छोड़ने की दृष्टि से शून्य ही रहता है। इन दिनों उपदेशकों-वक्ताओं की हर क्षेत्र में एक प्रकार की आँधी जैसी आई हुई है। ऊची कुर्सी पर बैठने, गले में माला पहनने और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

एक को प्रमुखता मिलने पर उसके अन्य साथी मुँह फुलाकर बैठ जाते हैं।

निजी सुविधाओं में कटौती के प्रति जो लोग श्रद्धा सँजो लेंगे, उन्हें सच्चे अर्थों में संयमी, तपस्वी, बैरागी कहा जा सकेगा, भले ही वे घर परिवार के बीच मिल-जुलकर सज्जनोचित जीवन निर्वाह करते हों। उनके लिए यह नितांत सरल होगा कि अपना आदर्श उपस्थित करते हुए अनेकों को अपेक्षाकृत ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने का प्रोत्साहन दे सकें। युग अध्यापकों की इन दिनों जो भारी पुकार है, वे इसी वर्ग में से निकलेंगे, जिन्होंने अध्यात्म दर्शन को इन आधारभूत सिद्धांतों को किसी सीमा तक अपना लिया होगा, जो आदर्श पालन की दृष्टि से दूसरों की अपेक्षा अपना स्तर कुछ ऊँचा उठा सके होंगे।

□□

युगचेतना का प्रचार विस्तार

संयम और सेवा के दो व्रत धारण कर लेने पर अध्यात्म स्तर की कर्म योग साधना बन पड़ती है। लोक शिक्षण इसी के अंतर्गत आता है। विद्या विस्तार यही है। इसी के माध्यम से चिंतन क्षेत्र पर छाई हुई विकृतियों का निराकरण किया जाता है। यदि मनुष्य सही सोचने और सही करने लगे, तो समझना चाहिए कि उसके लिए देवत्व अदृश्य न रहेगा, अपनी आभा और ऊर्जा का प्रत्यक्ष परिचय देने लगेगा। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए ५ लाख प्रौढ़ परिपक्वों तथा उनके साथ जुड़े हुए २० लाख गदराए प्रज्ञा-पुत्रों की सृजन-सेना विनिर्मित होती है। इसमें से एक लाख भूल-चूक के लिए छोड़ देने पर वे २४ लाख हर हालत में हो ही जाते हैं।

संयम तप से अपने निर्वाह तथा महत्वाकांक्षाओं में कटौती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तत्परता और तन्मयता अपनाने वाला हर व्यक्ति समय, श्रम, मनोयोग और साधनों की ढेरों बचत कर सकता है। उस बचत को नव सृजन के लिए लगाते रहने पर इतना कुछ बन पड़ सकता है कि महान परिवर्तन की संभावनाएँ साकार होने में किसी प्रकार का संदेह न रहे।

हर परिजन को न्यूनतम दो घंटे का समय अपने क्षेत्र में युग-चेतना को व्यापक बनाने के लिए लगाते रहने के लिए कहा गया है। २४ लाख व्यक्तियों के दो-दो घंटे मिलकर ४८ लाख घंटे होते हैं। ६ घंटे का एक श्रम दिवस मान लिया जाए तो आठ लाख व्यक्तियों के पूरे दिन के काम के बराबर हो जाते हैं। यह नवसृजन के विविध प्रयोजनों में खपा सके, तो ऐसा उत्साहवर्धक वातावरण बन पड़ेगा, जिसकी कल्पना मात्र से पुलकित कर देने वाला उत्साह उमँगने लगे।

चौबीस लाख व्यक्ति यदि न्यूनतम राशि २० पैसा ही एकत्रित करने लगें, तो वह चार लाख अस्सी हजार रुपया प्रतिदिन हो सकती है। इसे यदि सृजन शिल्पी विद्या विस्तार के लिए अपने-अपने क्षेत्र में मितव्ययता एवं सतर्कतापूर्वक लगाने लगें, तो उतने भर से अगणित क्षेत्रों की सृजन आवश्यकताएँ सहज ही पूरी हो सकती हैं। तब न सरकार से सहायता माँगने की आवश्यकता पड़ेगी और न कहीं दरवाजे-दरवाजे चंदा करने की। अपने छोटे परिवार का छोटा अनुदान संयुक्त रूप से इतना समर्थ हो सकता है कि अपनी पहुँच का कोई घर-गाँव नवयुग का अलख नित्यप्रति सुनते रहने से वंचित नहीं रहे और एक करोड़ व्यक्ति नवचेतना से अनुप्राणित हो सकें।

दुर्बुद्धि से, भ्रष्ट चिंतन और दुष्ट आचरण उभरता है। दुर्बुद्धि को भी कपड़े की तरह साबुन, पानी से धोया जा सकता है। यह दोनों है—स्वाध्याय और सत्संग। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि इन दोनों का नाम भर शेष है, पर उसका वास्तविक और प्राणवान स्वरूप न जाने कहाँ तिरोहित हो गया है। फिर दूसरी बात एक और है कि युग की समस्याओं के अनुरूप ही इन दोनों का निर्धारण होता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सत्साहस भी उन्हीं प्राणवान व्यक्तित्वों का काम देता है, जो न केवल प्रखर प्रतिभा से संपन्न हो, वरन् सामयिक उलझनों के समाधान का भी व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

शांतिकुंज की युग निर्माण योजना द्वारा युग साहित्य इन्हीं दिनों सृजा गया है, जिसका मूल्य प्रायः कागज स्याही जितना ही रखा गया है। कापीराइट भी किसी का नहीं है। कोई भी छाप सकता है। इसी प्रकार सत्संग के लिए भी एक सीमित परिधि की विचारधारा निर्धारित की गई है। प्रवचनों में भी सीमित विचारों को गहराई तक उतार देने पर ही बात बनती है, अन्यथा सड़कों पर मजमा लगाने वाले भी कुछ न कुछ बकझक करते और भीड़ जमा कर लेते हैं। ऐसी बकवास को सुनना भी भारी पड़ता है, क्योंकि उससे उल्टा और अहितकर चिंतन भी गले बँध सकता है।

सत्संग के दो पक्ष हैं—एक गायन दूसरा प्रवचन। यों इन दोनों की आवश्यकता पूरी करने वाली सस्ती पुस्तिकाएँ छाप दी गई हैं, पर जिनको और अधिक सरसता चाहिए उनके लिए वीडियो टेप तैयार कर दिए गए हैं। इनमें सूत्र संचालक के प्रवचन, माता जी के गायन और देव कन्याओं के सहकीर्तन सम्मिलित हैं। एक टेप ऐसा भी है जिसमें युग परिवर्तन के मूलभूत सिद्धांतों को संक्षिप्त एवं सरल सुबोध ढंग से समाविष्ट कर दिया है। यह टेप शांतिकुंज में उपलब्ध हैं, जिन्हें कोई भी अपने टेप रिकार्डर पर बजा कर एकत्रित लोगों के बीच युग प्रवक्ता की, युग गायक की भूमिका निभा सकता है। युग चेतना के प्रचार-विस्तार का यह भी एक सरल तरीका है।

विद्या विस्तार के लिए साहित्य और वाणी दोनों का उपयोग व्यापक रूप से किया जाना है। ज्ञान रथ, साइकिल यात्राएँ सद्वाक्य लेखन, झोला पुस्तकालय, सत्संग, दीपयज्ञ आदि के माध्यम से सृजनशिल्पी हर क्षेत्र में युग चेतना का विस्तार करने के लिए कटिबद्ध होकर जुट पड़ें—ऐसा माहौल बन रहा है। निर्धारित सीमित

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

झोला पुस्तकालय की प्रक्रिया कुछ दिनों में सफलतापूर्वक चल रही है। कंधे पर लटके झोले में युग साहित्य भर कर अपने परिचय क्षेत्र के शिक्षितों को घर बैठे, बिना मूल्य देते रहना और पढ़ लेने पर खुद ही जाकर उसे वापिस ले आना। ऐसे पढ़ने वालों को यह भी कहा जाता है कि वे इन पुस्तकों को संबद्ध अशिक्षित लोगों को सुनाते रहने की जिम्मेदारी भी उठाएँ। इस प्रक्रिया में युग चेतना से शिक्षितों और अशिक्षितों को समान रूप से अवगत अनुप्राणित होने का अवसर मिलता है। पढ़ा चुकने पर यही साहित्य घरेलू पुस्तकालय के रूप में बदल जाता है और परिवार की स्थायी निधि बनकर एक प्रकार का चेतना पुंज बना रहता है। हर महीने नई पुस्तकें खरीदते और भंडार बढ़ाते रहने की आवश्यकता उसी राशि से पूरी हो जाती है, जो हर दिन दस या बीस पैसे जितना सद्ज्ञान विस्तार प्रयोजन के लिए परिजन स्वेच्छापूर्वक निकालते रहते हैं। यह स्वाध्याय की छोटी, किंतु सशक्त प्रक्रिया हुई।

दूसरा पक्ष है—सत्संग, इसके लिए प्रज्ञा केंद्र में साप्ताहिक सत्संग चलते हैं। उनमें सहगान कीर्तन, युगसाहित्य पठन के आधार पर प्रवचन चलता रहता है। साथ ही थोडी सी अगरबत्तियाँ जलाकर कुछ दीपक थाली में रख कर दीप यज्ञ की पुण्य प्रक्रिया भी संपन्न हो जाती है। कहीं-कहीं साप्ताहिक सत्संग के स्थान पर यह प्रबंध किया गया है कि गृह स्वामी का जन्म दिवस जिस दिन हो, उस दिन अपने स्वजन संबंधियों की उपस्थिति में एक छोटा समारोह कर लिया जाए।

दीवारों पर आदर्श वाक्यों का लिखना एवं अलमारियों, किवाड़ों, फर्नीचरों, अटैची आदि पर स्टीकर चिपकाना अपने ढंग का एक अनौखा कार्य है, जो उधर से गुजरने या देखने वाले, हर किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और पढ़ने वाले के मस्तिष्क में एक बिजली-सी कौंधा देता है। यह कार्य यदि गली-मुहल्लों में भली प्रकार कर लिया गया है, तो समझना चाहिए यह बोलती दीवारें राहगीरों को ऐसा कुछ निरंतर सिखाती समझाती रहेंगी, जिन्हें आदर्शवादी प्रेरणाओं से ओत-प्रोत कहा जा सके।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नव सृजन की अनुपम अध्यात्म—साधना

दृश्यमान स्थूल शरीर के अतिरिक्त अदृश्य स्तर के दो शरीर और भी हैं, जिन्हें सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर कहते हैं। सूक्ष्म में दूरदर्शिता का और कारण में भाव-संवेदना का निवास है। इन क्षेत्रों को उनकी आवश्यकताएँ उपलब्ध होती रहें, तो आरोग्य संतुलन उनमें भी बना रहेगा। इन पर प्रभाव तो स्वाध्याय सत्संग का भी पड़ता है, पर यदि निर्धारित साधन उपचार भी अपनाए जा सकें तो और भी अच्छा। इनका समावेश रहने से उपरोक्त दोनों केंद्रों में प्रगति की और भी अधिक संभावना रहती है। सूक्ष्म शरीर के लिए जप और कारण शरीर के लिए ध्यान प्रक्रिया का, अनुभवी साधना विज्ञानियों ने निर्धारण किया है।

जप प्रयोजन के लिए अनेक मत-मतान्तरों के अपने-अपने नियम और निर्धारण हैं, पर यदि सार्वभौमं स्तर पर निरीक्षण-परीक्षण किया जाए, तो गायत्री महामंत्र सार्वजनीन स्तर का बैठता है। उसकी जप-पुनरावृत्ति करने पर व्यक्तियों में संयमित स्तर की प्रतिभा उभरती है, साथ ही अदृश्य वातावरण में भी प्रेरणाप्रद तत्वों का बाहुल्य बन पड़ता है। न्यूनतम १०८ मंत्रों की एक माला जप ली जाय, तो अंतराल में ज्ञान जैसी स्फूर्ति का अनुभव होता है। अधिक जिससे जितना बन पड़े, उतना ही अधिक लाभदायक रहेगा। अच्छा तो यही है कि नित्य कर्म से, स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध स्थान पर बैठकर जल और अग्नि की साक्षी में उसे संपन्न किया जाए। पूजा की चौकी पर छोटा जल कलश और अगरबत्ती जलाकर वातावरण को अधिक अनुकूल बना लिया जाए, पर जिनके लिए ऐसी स्वच्छता अपनाने में कठिनाई पड़ती हो, वे बिना स्नान किए भी मौन मानसिक जप कर सकते हैं। एक माला जपने में प्रायः पाँच मिनट

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लिए कठिन नहीं पड़ना चाहिए। इस प्रयास के आधार पर सूक्ष्म शरीर में पाई जाने वाली चौबीस ग्रंथियाँ जागृत होती हैं और उस आधार पर गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार होता है। मेधा निखरती और प्रतिभा उभरती है।

कारण शरीर की गहराई तक पहुँचने के लिए ध्यान-धारणा अपनाने की आवश्यकता पड़ती है। यों कई लोग अपने-अपने इष्ट देवों का भी ध्यान करते हैं। पर आप्त अनुभवी जनों के प्रतिपादन और निजी प्रयोग से यह जाना जा सकता है कि प्रातःकालीन सूर्य का ध्यान सर्वोत्तम है। बन पड़े तो प्रातः के उदीयमान सूर्य के प्रत्यक्ष दर्शन भी किए जा सकते हैं और जल अर्घ्य भी चढ़ाया जा सकता है; पर जिन्हें नियत समय पर किसी बड़ी अड़चन के कारण प्रत्यक्ष दर्शन न बन पड़े, तो वे मानसिक ध्यान भी उसी स्तर का कर सकते हैं।

प्रभात कालीन अरुणाभ सविता का ध्यान-दर्शन करने के साथ-साथ यह धारणा भी करनी चाहिए, कि दिव्य केंद्र से निःसृत होने वाली किरणें साधक के प्रत्यक्ष शरीर में-सूक्ष्म शरीर में और कारण शरीर में प्रवेश कर रही हैं। उन तीनों ही संस्थानों में प्रकाश भर रही है, साथ ही ऊर्जा, उष्णता और आभा स्तर की तेजस्विता का समावेश कर रही है। स्थूल शरीर में ओजस्, सूक्ष्म शरीर में तेजस् और कारण शरीर में वर्चस् का उभार आ रहा है। अपने रोम-रोम में, कण-कण में, सविता की ऊर्जा-आभा ओत-प्रोत हो रही हैं। व्यक्तित्व ओजस्वी, मनस्वी और तपस्वी बन रहा है। सविता और साधक, आग और ईंधन की तरह परस्पर एकीभूत हो रहे हैं। आदान-प्रदान का, समर्पण और अनुग्रह का उपक्रम अनवरत रूप से चल रहा है। यह दैनिक साधना है, यह जिनसे जितनी श्रद्धा और तत्परता के साथ बन पड़े, वे इसे नित्य कर्म के एक अविच्छिन्न अंग के रूप में करते रहें।

यह युग संधि की वेला है। इक्कीसवीं सदी के आगमन से पूर्व तक बीसवीं सदी चलेगी। यह अंतिम चरण कितनी ही उथल-पुथल से भरा हुआ होगा। इसमें प्रसव पीड़ा जैसी अनुभूति भी हो सकती है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और नवजात शिशु के आगमन का उत्साहवर्धक समाचार भी मिल सकता है। जन्म और मरण के आदि और अंत वाले अवसर भी ऐसी ही उथल-पुथल भरे होते हैं।

रात्रि का समापन और प्रभात का आगमन संध्याकाल कहलाता है। उसमें साधारण क्रिया-प्रक्रिया की अपेक्षा हर किसी को कुछ नये स्तर का क्रिया-कलाप अपनाना पड़ता है। युग संधि में भी शांतिकुंज की एक बारह वर्षीय योजना बनी है। इसमें दस वर्ष बीत चुके। दो वर्ष शेष हैं। इस अवधि में एक आध्यात्मिक सामूहिक महाअनुष्ठान चल रहा है—हर दिन २४ करोड़ गायत्री जप करने का। दूसरों के लिए यह लक्ष्य हिमालय जैसा भारी प्रतीत हो सकता है; पर अपने २४ लाख परिजन यदि एक माला गायत्री जप और सविता के ध्यान में पाँच-दस मिनट लगाते रहें तो इतने भर से संकल्पित साधना भली प्रकार पूरी होती रहेगी।

प्रचार-विस्तार का क्रम तेजी से चल रहा है। इस साधना की पूर्णाहुतियाँ १९९५ तथा २००० में होंगी, जिनमें न्यूनतम एक एक करोड़ व्यक्ति सम्मिलित होंगे। इन सबको, इस प्रथम चरण की पूर्णाहुति करके अगले नये सोपान में और भी अधिक श्रद्धा-संवेदना के, उत्साह एवं साहस के साथ प्रवेश करना होगा। इसलिए दो पूर्णाहुतियों के आयोजन की योजना बनी है। यदि इतने लोगों का एकत्रीकरण एक जगह न बन सका, तो उसे मिशन द्वारा संचालित २४ सौ प्रज्ञा केंद्रों में विभाजित भी किया जा सकता है। पूर्णाहुति की इस विशालता का लक्ष्य यथावत रहेगा; पर उसे एक या अनेक स्थानों पर संपन्न करने की बात अवसर आने पर परिस्थितियों के अनुरूप ही निश्चित होगी।

सामूहिकता की शक्ति से सभी परिचित हैं। भव्य भवन, असंख्य ईंटों से मिलकर बनते हैं। अनेक धागे मिलकर कपड़ा बनता है। तिनकों को बटकर मजबूत रस्से बनते हैं। सैनिकों का समुदाय मिलकर समर्थ सेना का रूप धारण करता है। मधुमक्खियाँ मिल-जुलकर ही छत्ता बनाती और शहद जमा करती हैं। देवताओं की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से घड़ा भर जाने पर उससे असुर निकंदनी सीता का उद्भव हुआ था। अणुओं से मिलकर यह दृश्य जगत विनिर्मित हुआ है। नव-युग के अवतरण में भी बुद्ध के परिव्राजकों एवं गाँधी के सत्याग्रहियों जैसा संगठन अभीष्ट होगा।

युग संधि महा पुरश्चरण को, नव युग की ज्ञान गंगा को धरती पर अवतरित करने वाली सम्मिलित स्तर की भगीरथ साधना कहा जा सकता है। उसे लघु से विभु बनाने में मत्स्यावतार जैसी भूमिका भी तो निबाहनी है। इसलिए देव मानवों को एक छत्र-छाया में एकत्रित करना भी अनिवार्य हो गया है। इस संदर्भ में सन् ५८ में एक सहस्र कुंडी गायत्री महायज्ञ का प्रथम प्रयोग गायत्री तपोभूमि, मथुरा में हो चुका है। युग निर्माण योजना की सुविस्तृत रूप-रेखा उसी अवसर पर बनी थी और तब से लेकर अब तक की अवधि में उसने नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्षेत्रों में आश्चर्यजनक समझी जाने वाली क्रिया-प्रक्रिया संपन्न की है। एक जोरदार धक्का भर इंजन देता है, तो डिब्बे उसी ठोकर के कारण दूर तक पटरी पर दौड़ते चले जाते हैं। अभी सन् १९९० से २००० तक प्रायः दस वर्ष में इतनी समर्थता अर्जित कर ली जाएगी कि पूर्णाहुति के रूप में मारी गई जोरदार ठोकर इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य का प्रत्यक्ष दर्शन एवं अनुभव करा सके।

□□

वाणी द्वारा युग चेतना का प्रसार-विस्तार

इन दिनों जन साधारण के सोचने का तरीका लोभ-मोह और अहंकार के साथ बुरी तरह जुड़ गया है। चल रहे ढर्रे को अभ्यास में इस कदर उतार लिया गया है कि अवांछनीय होने पर भी उसका मोह छोड़े नहीं छूटता। इस स्थिति को पूरी तरह उलटना पड़ेगा और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जिसे स्वतंत्र चिंतन एवं नव निर्धारण की संज्ञा दी जा सके। अपना सो अच्छा, पराया सो बुरा की मान्यता सही नहीं है। सत्य के दर्शन जहाँ से भी होते हैं, वहीं से उसका चयन करना चाहिए। औचित्य को अंगीकृत करने में हमें राजहंस की तरह नीर-क्षीर विवेक की नीति अपनानी चाहिए। विचारक्रांति का स्वरूप भी यही है।

विचारों को प्रभावित करने वाली दो प्रक्रियाएँ सर्व साधारण की जानकारी में हैं। एक वाणी दूसरी लेखनी। इसमें से पहली द्वारा सत्संग संपन्न होता है, दूसरी स्वाध्याय का सरंजाम जुटाती है। वाणी का लाभ शिक्षित-अशिक्षित दोनों ही समान रूप से उठा लेते हैं। लेखनी को अशिक्षित लोग पढ़ नहीं पाते, पर सुन वे भी लेते हैं। इन दोनों को छैनी-हथौड़ा मानकर, हमें कठोर पत्थर जैसी निष्ठुर स्वार्थपरता को युग के अनुरूप आकार में गढ़ना चाहिए। वाणी और लेखनी को प्रचंड अस्त्र-शस्त्र मानकर हमें संव्याप्त असुरता से लड़ने के लिए, सीना तानकर जूझने के लिए युद्ध क्षेत्र में उतरना चाहिए।

यों सत्संग के नाम पर सड़ा-गला, कूड़ा कचरा लोगों के सिरों पर थोपा जाता रहता है; पर उपयोगिता की कसौटी पर कसकर उसकी सार्थकता तभी स्वीकार करनी चाहिए, जब वह आज की समस्याओं का आदर्शवादी एवं व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कर रहा हो। स्वाध्याय के संबंध में भी इसी कसौटी का प्रयोग होना चाहिए। आवश्यक नहीं कि वह किसी पुराने व्यक्ति द्वारा, पुरानी भाषा में लिखी गयी हो। जो पुराना, सो सच-यह मान्यता ऐसी नहीं है जिसे आँखें बंद करके, नाक मूँदते हुए गले उतार ही लिया जाए। कोई बूढ़ा भी सनकी हो सकता है और कोई किशोर भी समझदारी की बात कह सकता है। क्या अंगीकार करें ? उसका एक ही उत्तर हो सकता है कि जिसमें औचित्य का गहरा पुट हो, जिसमें समाधान के तर्क, तथ्य, उदाहरण और प्रमाण इस अनुपात में विद्यमान हों कि सीधे गले उतर चलें और उत्कृष्टता की पक्षधर हलचल उत्पन्न कर सकें। लेखनी और वाणी का युग चेतना से जुड़ा हुआ प्रयोग हमें इन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वाणी का सर्वविदित उपयोग व्याख्यान, प्रवचनों के रूप में ही होता आया है, किंतु उसके लिए यह आवश्यक पड़ता है कि अधिक लोगों का बड़ा समुदाय एक जगह एकत्रित हो और उसका स्वरूप सभा-समारोह जैसा न सही, कम से कम विचार गोष्ठी जैसा तो बन ही जाए। कठिनाई यह है कि ऐसा सरंजाम जुटाना इन दिनों अति-आडंबर भरा और संकीर्ण हो गया है। जानने वाले जानते हैं कि रैलियाँ निकालने वालों और बड़े सम्मेलन बुलाने वालों को कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं और कितनी बड़ी राशि खर्चनी पड़ती है। फिर अधिक बड़ी भीड़ का जमाव वहाँ भी मेले-ठेले जैसा बनकर रह जाता है। ध्वनि विस्तारकों से सुनने वालों के मनों में भी कोई तीखी प्रेरणा नहीं उभरती, जिससे कुछ आदर्शवादी उमंग उभरने की आशा की जा सके।

पुराने जमाने में लाउडस्पीकर नहीं थे, इसलिए विशाल भीड़ जमा करने वाले समारोहों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। उन दिनों छोटे आकार के कथा प्रवचनों से काम चलाया जाता था। हमें उसी पुरातन परंपरा पर लौटना पड़ेगा। छोटे देहातों के गली-मुहल्लों में बिखरे हुए जन समुदाय को नुक्कड़ सभाओं जैसी प्रक्रिया अपनाकर काम चलाना होगा। चुनावों में खड़े होने वाले भी यही तरीका अपनाते हैं।

पहाड़ खुद चलकर अपने घर न आए तो दूसरा तरीका यही शेष रहता है कि खुद चलकर पहाड़ की तलहटी या चोटी तक पहुँचा जाए। प्रसुप्त जनमानस को उनींदी खुमारी से जगाने-झकझोरने के लिए स्वयं ही भाग-दौड़ करने का औचित्य है। उस प्रयोजन के लिए प्रज्ञा पुराण की कथा मुहल्ले-मुहल्ले करने का एक सफल प्रयोग पिछले लंबे समय से चल रहा है। अब पर्व-त्यौहारों पर छुट्टी का दिन भी इसके लिए उपयुक्त समझा गया है कि उस बहाने लोगों को एकत्रित करके, हर पर्वों के साथ जुड़ी हुई प्रगतिशीलता को उभारा और जनमानस को आवश्यक परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। मेले और प्रदर्शनियाँ भी इस प्रयोजन के लिए कारगर हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक नितांत अभिनव प्रयोग इन दिनों और आविष्कृत किया गया है। साइकिल के पहियों वाला ज्ञानरथ इस प्रकार का बनाया जाए, जिसमें बैटरी, टेपरिकार्डर और लाउडस्पीकर लगे हुए हों। उसमें मुफ्त पढ़ाने या बेचने के लिए युग साहित्य भी प्रस्तुत रहे। इसे गली मुंहल्लों, हाट बाजारों में घुमाया जाए। युग चेतना से परिपूर्ण संगीत बजता रहे, प्रवचन चलता रहे। अधिक जानने के उत्सुकों को युग साहित्य पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता रहे। इस प्रकार प्रभात फेरियाँ निकालने, मुहल्ले-मुहल्ले अलख जगाने, नुक्कड़ सभाएँ जुटाने का बहुमुखी कार्यक्रम दिनभर चलता रह सकता है। इसे घुमाने के लिए कोई साधारण समझ का आदमी भी काम करता रह सकता है। आवश्यक नहीं कि वह वक्ता, गायक, प्रचारक स्तर का ही हो। थोड़ी समझदारी भर हो, तो ज्ञानरथ को बारी-बारी से मुहल्ले-मुहल्ले घुमाते हुए किसी बड़े बाजार-शहर के कोने-कोने में भी युग संदेश पहुँचाने का कार्य चल सकता है।

इसी योजना के दो छोटे संस्करण भी बने हैं। इनमें से एक है, साधारण साइकिल पर उपरोक्त प्रचार सामग्री फिट कर दी जाए। उससे सवारी का काम भी लिया जा सकता है और अधिक विस्तृत कार्य क्षेत्र में काम किया जा सकता है। दूसरा है एक छोटी अटैची-उपकरण स्तर का, इसमें भी उपरोक्त सभी प्रचार सामग्री फिट है। इसे किसी भी घर, मुहल्ले, पार्क, मंदिर, घाट आदि लोगों के इकट्ठे होते रहने वाले स्थान पर लगाया और नवयुग का संदेश, गायनों और भाषणों के माध्यम से सुनाया जा सकता है।

उपरोक्त तीनों प्रचार वाहनों में ऐसी बैटरी लगी है, जिसे दिन भर काम में लाया जा सकता है और रात को बिजली से, चार्जर के माध्यम से फिर नए सिरे से काम करने योग्य बनाया जा सकता है। इन तीनों की आधारभूत लागत भी इतनी है, जिसे कोई साधारण स्थिति का व्यक्ति भी आसानी से वहन कर सके। छोटा उपकरण प्रायः एक हजार का, साइकिल वाला दो हजार का और चार पहियों

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

साइकिल या ज्ञानरथ पहले से पास हो तो उसका मूल्य कम हो जाता है।

जहाँ इनमें से कोई उपकरण न बन पड़े, वहाँ खंजरी, मजीरा के सहारे एक या दो व्यक्ति प्रचार कार्य करते रह सकते हैं। उसमें लागत बीस पच्चीस रुपये भर आती है और उस माध्यम से जहाँ भी दस-बीस आदमी इकट्ठे हों, वहाँ अपना युग प्रतिपादन आसानी से आरंभ किया जा सकता है।

❑❑

लोक-रंजन के साथ जुड़ा हुआ लोक-मंगल

युग चेतना का स्वरूप निर्धारण, उसका लेखन प्रकाशन शांतिकुंज, हरिद्वार और युग निर्माण योजना मथुरा द्वारा छोटे साधनों से चल रहा है। फिर भी वह अपनी गुणवत्ता के कारण निरंतर लोकप्रिय हो रहा है। मूल्य इतना सस्ता रखा गया है कि इस स्तर के प्रकाशनों की पंक्ति में उसे एक कीर्तिमान स्तर का कहा जा सकता है। इसे व्यावसायिक प्रकाशन वाले दृष्टिकोण से सर्वथा पृथक रखा गया है। लगभग कागज, छपाई जितना ही इनका मूल्य रखा गया है; ताकि ईसाई मिशनों द्वारा छपने और प्रचारित किए जाने वाले स्तर से समता की जा सके।

इन दिनों जो करना, लिखना और प्रतिपादन प्रस्तुत करना शेष है, वह इतना सुविस्तृत है कि युग-मनीषियों की कई सुनियोजित मंडलियाँ खप सकती हैं। प्रकाशन के लिए इतना बड़ा तंत्र चाहिए, जितना कि विशालकाय कल-कारखाने में लगता है। क्षेत्रीय भाषाओं में से कितनी ही ऐसी हैं, जिनने संसार के विशाल भागों पर अपना वर्चस्व जमा रखा है। इन क्षेत्रों में युग चिंतन, उन परिस्थितियों के साथ जोड़ते हुए प्रस्तुत किया जाना है, जिनसे उनकी जीवन पद्धति है, जिनसे संस्कृति जुड़ी हुई है। इनको माध्यम बनाना हो तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मौलिक आदर्शों को यथावत रखते हुए भी उनका व्यावहारिक स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत करना पड़ेगा, जो उन समुदायों की वर्तमान मान्यताओं के साथ तालमेल बिठाते हुए प्रगति का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत कर सके।

ईसाई धर्म की एक छोटी सीमा है, पर उसने अपनी विचार-धारा को व्यापक बनाने के लिए बाइबिल से लेकर छोटी पुस्तिकाओं तक को संसार की प्रायः सभी भाषाओं में करोड़ों की संख्या में छापा और उपयुक्त व्यक्तियों तक पहुँचाया है। यही कारण है कि उस विचारधारा से प्रभावित होकर संसार के प्रायः एक तिहाई मनुष्यों ने उस धर्म में प्रवेश पा लिया है।

साम्यवादी देशों ने भी अपने सीमित क्षेत्र में ही नहीं, संसार की अनेक भाषाओं में अपने मंतव्य को प्रकाशित किया है। सरकारें अपनी-अपनी नीतियों का स्पष्टीकरण करने के लिए प्रचार प्रकाशन पर एक बड़ी राशि खर्च कर रही है। यह न तो अकारण है और न अनावश्यक। अब लोक मानस इतना समर्थ हो गया है कि उसे साथ लिए बिना बहुसंख्यक लोगों का समर्थन प्राप्त करना संभव ही नहीं रहा है। युग परिवर्तन प्रक्रिया उपरोक्त सभी क्षेत्रों से बढ़कर है। उसका सीधा संबंध संसार के ६०० करोड़ मनुष्यों के साथ जुड़ता है। यदि विशाल समुदाय में नवयुग के प्रति उत्सुकता, श्रद्धा एवं प्रयत्नपरायणता उत्पन्न न की जा सकी, तो पिछड़ापन चिरकाल तक अपनी हथकड़ियाँ, बेड़ियाँ कसे ही रहेगा।

दुर्भाग्य से संसार में अभी एकता-समता को अपनाने के लिए अधिक उत्साह नहीं उपजा है। इस संदर्भ में भाषाओं की भिन्नता कोढ़ में खाज की तरह है। कोई एक भाषा ऐसी नहीं, जिसका अवलंबन लेकर विश्व मानव तक उज्ज्वल भविष्य के संदेश एवं आलोक को पहुँचाया जा सकना संभव हो सके। ऐसी दशा में विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के लिए उन्हीं के अनुरूप भाषाओं का आश्रय लेकर,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अब लोक चेतना को दिशा देने के लिए कुछ और सशक्त माध्यम अपनी प्रचंड शक्ति का परिचय देने लगे हैं। इनमें से एक है सिनेमा-फिल्म व्यवसाय। इसी का दूसरा छोटा भाई अभी और जन्मा है, वह है वीडियो। इनके द्वारा दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों ने लोक चेतना को असाधारण रूप से प्रभावित किया है। इनकी पहुँच साहित्य क्षेत्र से कम नहीं रही, वरन वे और भी अधिक बढ़ गई है। इनका लाभ संसार की एक तिहाई शिक्षित जनता ही नहीं उठाती, वरन शेष दो तिहाई अशिक्षित जनता भी संपर्क में आती और प्रभाव ग्रहण करती है।

सरकारों के कब्जे में दूरदर्शन और रेडियो दोनों आ गए हैं। वे अपने मतलब की जानकारियाँ तो जनता तक पहुँचाते ही हैं, साथ ही ऐसा बहुत कुछ घुला-मिला देते हैं, जो कामुकता जैसी दुष्प्रवृत्तियों को मनोरंजन का नाम देकर दर्शकों के गले उतार देता है। यह दोनों समर्थ साधन युग चेतना के अनुरूप चल सकते हैं, इसकी आशा तो फिलहाल नहीं की जा सकती है, पर इनके और भी दूसरे सुलभ संस्कार इस स्थिति में हैं कि उनका उपयोग जन स्तर के समर्थ संगठनों द्वारा किया जा सके।

टेप और टेप रिकार्डर द्वारा रेडियो की एक छोटी सीमा तक आवश्यकता पूरी की जा सकती है। फिल्में बनाने वाले यदि कुछ साहस करें, तो वे भी विचार क्रांति की महती आवश्यकता में अपना कुछ कहने लायक योगदान दे सकते हैं। फिर उसका छोटा भाई वीडियो भी अब इस योग्य हो सकता है कि अपने दुबले पैरों और पंखों द्वारा किसी प्रकार घिसटते-घिसटते जन समुदाय के एक बड़े भाग तक अपना प्रभाव पहुँचा सके। यदि संभव हो तो समर्थ व्यक्ति इन दोनों माध्यमों को भी इतना सरल और सस्ता बना सकता है कि जन-जन तक उनकी पहुँच हो सके और समय की माँग को पूरा करने में वे दोनों कुछ कहने लायक बड़ी भूमिका निभा सकें। ग्रामोफोन रिकार्डर उद्योग और स्लाइड प्रोजेक्टर अब समय से पीछे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी पिछड़े क्षेत्रों में और पिछड़े समुदायों में अपनी भूमिका निभाते रहने में अभी भी उपयोगी बनाया जा सकता है।

कभी जनशक्ति के सहारे चलने वाले प्रचार प्रयोजन भी गाँव-गाँव पहुँचते और लोक रंजन के साथ-साथ लोक मंगल का काम भी अच्छी तरह करते थे। उनसे आजीविका भी मिल जाती थी और लोक रंजन के साथ-साथ लोकमंगल का प्रचार कार्य भी बहुत हद तक हो जाता था, पर बढ़ती हुई यांत्रिक सभ्यता के कारण उनका आधार लड़खड़ा गया है।

राम लीला, रास लीला, नौटंकी, संगीत मंडलियों, कठपुतलियों आदि के द्वारा कुछ समय पूर्व तक बड़ा काम होता रहता था और हजारों लोगों को आजीविका मिलती थी; पर अब ग्रामोद्योगों की तरह उन्हें भी उपेक्षा का भाजन बनना पड़ रहा है। एक प्रकार से उनका अस्तित्व ही मिटता जा रहा है। गाँवों में लगने वाली हाटें अपने थोड़े से उद्योगों को असाधारण रूप से प्रोत्साहित किया करती थीं, पर इन दिनों की परिस्थितियों को देखते हुए कुछ कहा नहीं जा सकता है कि इन सब का भविष्य क्या है ? फिर भी यदि गतिशील प्रतिभाएँ कुछ प्रयत्न करें, तो यह भी हो सकता है कि वे माध्यम, कुछ सुधरे हुए रूप से निर्वाह करने लगें।

बड़े माध्यम जिनके हाथ नहीं हैं, वे भी अपने संपर्क क्षेत्र में विचार विनिमय का कोई न कोई रास्ता निकाल सकते हैं। नाटक, अभिनय, लोक नृत्य आदि की सही व्यवस्था न बन पड़े, तो इतना तो हो ही सकता है कि अपने से छोटों को किस्से-कहानियाँ सुनाकर, आदर्श जनों के जीवन चरित्र सुनाकर, उन पर गीत बनाकर, खंजरी जैसे छोटे वाद्यों के सहारे उन्हें जगह-जगह सुनाते रहने का क्रम अपनाया जाए। आठवें दर्जे का विद्यार्थी छोटे दर्जे के छात्रों को बहुत कुछ पढ़ाने-सिखाने की सहायता तो कर ही सकता है। बड़ों को न सही छोटों को आदर्शवादी प्रेरणाएँ देते रहने की दृष्टि से तो हम सभी उपयोगी सिद्ध हो ही सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तीर्थयात्रा का आदर्श

दक्षिण अफ्रीका से जब गाँधी जी भारत लौटे और उन्होंने देश सेवा में लगने की इच्छा व्यक्त की, तो गोखले जी ने उन्हें प्रथम परामर्श दिया कि पहले एक बार समूचे देश की यात्रा कर लें और यह जानें कि लोगों की परिस्थितियाँ क्या हैं ? गाँधी जी सहमत हो गये। दौरे पर निकले और देश के पिछड़ेपन का दृश्य देखकर मन में एक कसक लेकर वापस लौटे। कुछ महिलाओं को आधी धोती पहन कर नहाते और दूसरा पल्ला सुखा कर पहनते देखा, तो वे उस गरीबी पर द्रवित हो उठे और उसी दिन से उनने आधी धोती पहनने और ओढ़ने का व्रत लिया।

खुशहाली के वातावरण में रहने और चैन की जिंदगी बिताने वालों को यह पता ही नहीं कि देशवासी किस स्थिति में रह रहे हैं और पड़ौसियों के प्रति जिम्मेदारी निभाने का क्या अर्थ होता है ? यह जानकारी देशाटन से ही प्रत्यक्ष अनुभव में आती है।

"पिकनिक" मन हल्का करने का एक अच्छा मनोरंजन माना जाता है। सभ्य समुदाय के लोग इसे अत्यन्त प्रभावशाली और सार्थक विनोद मानते हैं। पर्यटन के लिए सरकारी महकमें भी अपने कर्मचारियों को, विद्यार्थियों-अध्यापकों को छुट्टी देते हैं; ताकि वे नई ताजगी लेकर वापस लौट सकें और भविष्य में अधिक उत्साहपूर्वक काम कर सकें।

पुरातन काल में उस प्रक्रिया के साथ धार्मिकता भी जोड़ दी जाती थी। जो जत्थे प्रवास पर निकलते, वे रास्ते में नारे लगाते, गीत गाते और दीवालों पर आदर्श वाक्य लिखते जाते थे। जहाँ ठहरने का निर्धारण होता था, वहाँ पूर्व सूचना भिजवा दी जाती थी ताकि स्थानीय लोग एकत्रित होकर तीर्थ यात्रियों में से जो वक्ता, गायक धर्म सेवी होते थे, उनके प्रवचन सुनकर अपनी जीवन शैली में — परिवर्तन सुधार कर सकें।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तीर्थ यात्राएँ वाहनों से नहीं होती थीं, उनके लिए पैदल ही चलना पड़ता था। अभी भी ब्रज-चौरासी कोस, प्रयाग की पाँच-कोसी परिक्रमा, नर्मदा परिक्रमा आदि के लिए पैदल ही निकलते हैं, ताकि यात्री अनुभव संपादन, पारस्परिक परिचय एवं स्वास्थ्य संवर्धन की त्रिविध प्रक्रियां से लाभान्वित हो सकें। अब पैदल चलने और कधे पर आवश्यक सामान लादकर चलने का प्रचलन नहीं रहा, तो साइकिल का इस्तेमाल किया जा सकता है। वह भी पैरों की शक्ति से चलती है, पर समय बचत करती है, जन संपर्क भी संभव बनाती है।

इन दिनों लोग रेल-मोटरों में दौड़ लगाते, किसी देवता की प्रतिमा का दर्शन करते और जलाशयों में डुबकी लगाकर वापस लौट आते हैं। बड़े मंदिर देखने का विशेष आकर्षण रहता है, जो प्रायः बड़े नगरों में ही विनिर्मित होते हैं, जबकि असली भारत देहातों में रहता है। वहीं की समस्याएँ देश की समस्याएँ हैं। वहीं की प्रगति से देश के प्रगतिशील होने की आशा की जाती है। इसलिए तीर्थ यात्राएँ पैदल की जाती थीं। कम समय खाली होने पर तीर्थयात्री अपने आस-पास का ही प्रवास क्रम बना लेते थे। उसी मार्ग में आने वाले छोटे-बड़े देवालयों, नदी, सरोवरों पुरातन वृक्षों, उद्यानों का दर्शन करके अपनी धर्म जिज्ञासा पूरी करते थे।

जिनके पास अधिक समय होता था, वे मंझोले तीर्थों में चलते रहने वाले धर्म-सम्मेलनों में योजनाबद्ध प्रशिक्षण और साथ ही जुड़े हुए साधना क्रम को भी संपन्न कर लेते थे। छोटे-बड़े देवालय प्रायः हर गाँव में होते थे। उनमें इतनी जगह भी सुरक्षित रहती थी कि तीर्थ यात्रियों की कई टोलियाँ आए, तो वहाँ सुखपूर्वक निवास कर सकें; स्थानीय लोग उन तक पहुँचकर अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सकें।

देवालयों में दान-दक्षिणा एवं अन्न श्रद्धालु लोग पहुँचाते रहते थे। उससे स्थानीय कार्यकर्ता, पुजारी का निर्वाह तो चल ही जाता था, तीर्थ यात्रियों को भी खाने-पकाने की कच्ची सामग्री मिल जाती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

थी। इस आधार पर छोटे-बड़े सभी क्षेत्रों को तीर्थ-यात्रियों द्वारा दी गई प्रेरणाओं का लाभ मिलता रहता था।

बड़े मंदिर प्रायः बड़े शहरों में ही बने हुए हैं। वहाँ रेल, मोटरों से दौड़े जाने, घिच-पिच बढ़ाने, धक्के खाने से किस प्रकार धर्म-लाभ मिल सकता है, यह समझ से बाहर की बात है। जिसके साथ धर्म-प्रचार जुड़ा हुआ न हो, उसके द्वारा किसे, किस प्रकार धर्म लाभ मिलेगा ? जहाँ क्रमबद्ध साधनाएँ, शिक्षण, सत्संग की व्यवस्था न हो, उन देवालय क्षेत्रों में क्या किसी को कुछ लाभ मिलेगा ?

गंगाजल की काँवर कंधे पर रखकर अपने निकटवर्ती शिवालय पर चढ़ाने और रास्ते को पैदल पार करते हुए मार्ग में प्रेरक भजन गाते चलने का रिवाज अभी भी बहुत जगह है। इस आधार पर पुरातन परंपरा के पीछे सन्निहित उद्देश्यों का तो स्मरण आता ही है। यह क्रम प्रतिमाएँ झाँकते फिरने, डुबकी लगाते फिरने और पात्र-कुपात्रों से जेब कटाते फिरने की अपेक्षा कहीं अधिक उद्देश्यपूर्ण है।

शांतिकुंज को तीर्थ केंद्र मानकर विभिन्न शाखा केंद्रों से साइकिल टोलियाँ चलती रहती हैं। रास्ते की दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखते, मिल-जुलकर गीत गाते, लाउडस्पीकरों का प्रयोग करते, विश्राम स्थलों पर सत्संग संपन्न करती हुई, वहाँ पहुँचती रहती हैं। जिनसे दूर की यात्रा नहीं बन पड़ती, वे अपने समीप ही प्रायः एक सप्ताह का कार्यक्रम बना लेते हैं और उस परिधि में नव युग के अनुरूप नव जीवन का संचार करते हैं।

अचल तीर्थ वे हैं, जो ईंट, चूने, सीमेंट जैसे जड़ पदार्थों से बने होते हैं; अपनी जगह स्थिर रहते हैं। लोगों को उनके दर्श-स्पर्श के लिए जाना पड़ता है। उनकी महिमा-गरिमा तो है, पर उनसे अधिक नहीं, जो जीवंत होते, चलते-फिरते और प्राण-चेतना बिखेरने गली-मुहल्लों में घर-द्वारों पर बिना बुलाए ही जा पहुँचते हैं। किसी जमाने में साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थ, परिव्राजक इसी प्रयोजन को लेकर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रतिष्ठापना का शंख बजाते थे। अब लगता है उसका प्रचलन उठ गया। जड़ता ने अब अहंकार में, आलस्य-प्रमाद के रूप में ऐसी रीति-नीति अपना ली है, जिसमें घर बैठे ही प्रचुर मात्रा में सम्मान, सुविधा और साधन उपलब्ध होते रहें। प्रतीत होता है कि अचल देवालयों की तुलना में जिन चल देवालयों का पुण्य-प्रताप असंख्य गुना माना जाता है, उसका कलियुगी प्रभाव से अस्तित्व ही उठ गया।

इसे फिर से जीवित-जाग्रत करने की आवश्यकता है, अन्यथा जिनमें लंबी दूरी पार करने और पैसा खर्चने की सामर्थ्य नहीं है, वे तीर्थों की धर्म-धारणा से वंचित ही रह जाएँगे।

पिछले लेखों में बताया जा चुका है कि वक्ताओं, गायकों के स्तर वाले परिव्राजकों का अभाव देखते हुए समय की माँग पूरी करने के लिए शांतिकुंज ने कुछ नए उपकरण इन्हीं दिनों बनाए हैं, जो उपरोक्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। इनके सहारे कोई भी शिक्षित-अशिक्षित, अपने आप को चल तीर्थ बना सकता है और हाट-बाजारों में गली-कूचों में, पार्कों-सड़कों, भीड़ भरे क्षेत्रों में अलख जगाते रहने का निरंतर कार्य कर सकता है। साधु-ब्राह्मणों का लगभग अभाव हो जाने की स्थिति में नैष्ठिक साधकों द्वारा, इन यंत्रों के सहारे भी सचल-सार्थक तीर्थ यात्राओं की आवश्यकता पूरी की जा सकती है।

❑❑

आगामी दस वर्ष-अति महत्वपूर्ण

प्राचीन काल में सतयुग का वातावरण अनायास ही नहीं बना रहा था। उसके लिए ऋषिकल्प महामानव विद्या विस्तार के दायित्व को पूरी तत्परता से सँभालते थे। आश्रमों, तीर्थों, आरण्यकों, गुरुकुलों,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जगाने जैसी विधाओं के माध्यम से जन-जन को श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों से विभूषित किया जाता था। अध्यात्म विद्या का अविरल प्रवाह हर क्षेत्र में बहता रहता था, जिसके कारण हर व्यक्ति आदर्शों को अपनाने तथा उस दिशा में कुछ कर गुजरने के लिए हुलसता रहता था।

अंतराल में सद्भावनाएँ लहराती हों, तो कोई कारण नहीं कि प्राण-चेतना में उल्लास भरी उमंगें न उभरें और उस आकर्षण से प्रकृति का अनुग्रह अजस्त्र रूप से न बरसे, वातावरण में सुख-शांति के तत्व उछलते-उफनते दीख न पड़े। सत्युग इन्हीं परिस्थितियों का नाम था। उसका सृजन उत्कृष्टता की पक्षधर मनःस्थिति ही किया करती थी।

अगले दिनों सतयुग की वापसी के सरंजाम पूरी तरह संभावित हो रहे हैं। उनमें भी पूर्ववर्ती सौम्य-संपदाओं का समुचित समावेश होने जा रहा है। अस्तु, यह भी स्वाभाविक है कि वैसा ही जनमानस बने और उसके लिए पुरोहित वर्ग में सम्मिलित समझे जाने वाले, जनमानस के परिष्कार में संलग्न देव-मानवों का एक सशक्त और बड़ा वर्ग, नियंता की नियति को शिरोधार्य करते हुए आगे आये। उसके लिए जीवंतों और जीवितों के मन-मानस में समुद्र मंथन-स्तर का हृदयमंथन चल रहा है। विचार-परिवर्तन और दैवी-आह्वान को सुनने-समझने एवं अपनाने के लिए प्रवाह बह रहा है। इन दिनों ऐसे भँवर-चक्रवात इतनी तेजी से उभर रहे हैं, जिन्हें देखकर समय की प्रबलता का अनुमान कोई भी कर सकता है। महाकाल जब करवटें बदलता है, तो ऐसी उलट-पुलट बन पड़ती है, जिसे देखकर दाँतों तले अँगुली दबानी पड़े। इन दिनों ऐसा ही कुछ हो रहा है-होने वाला है।

समय चक्र के अंतर्गत यों पुनर्जीवन भी होता रहता है; पर पुनर्जागृति के दृश्य तो आये दिन देखने को मिलते ही रहते हैं। रात आते ही लोग सो जाते हैं और प्रातःकाल नयी स्फूर्ति लेकर सभी उत्साहपूर्वक उठ खड़े होते हैं। पतझड़ में पेड़ ठूँठ बन जाते हैं; पर बसंत आते ही उन्हें नयी कलियों एवं नये फूलों से लदा हुआ देखा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जा सकता है। कुयोग जैसा कलियुग विगत शताब्दियों में अपनी विनाश-लीला दिखाता रहा है। अंत तो उसका होना ही था, हो भी रहा है। सतयुग की वापसी का इंतजार दसों दिशाएँ उत्सुकतापूर्वक कर रही हैं।

युग संधि काल बारह वर्ष में ऐसा ही ताना-बाना बुन रहा है। उसने अपना घोंसला शांतिकुंज में बनाया है। कार्य क्षेत्र तो उनका द्रुतगामी गरुड़ पक्षी की तरह दसों दिशाओं में फैलना निर्धारित है। इस घोंसले में एक से एक बढ़कर अंडे-बच्चे उगने, विकसित होने और निखिल आकाश में पंक्तिबद्ध उड़कर एक सुहावना दृश्य उत्पन्न करने वाले हैं।

वसंत सन् १९९० से लेकर सन् २००० तक के दस वर्षों में युग चेतना को वहन करने वाले समर्थ पक्षधर विनिर्मित एवं कार्यरत होने जा रहे हैं। प्रारंभिक निश्चय यह है कि एक वर्ष में एक लाख को ढूँढ़ा और पकाया जाय। स्थान की कमी इस कार्य में प्रधान बाधा थी। आसुरी शक्तियाँ सदा से सत्प्रयोजन में अड़चन उत्पन्न करने में चूकती नहीं है। उन्हीं का प्रकोप इन दिनों भी काम करता दीख पड़ रहा है, फिर भी गति रुके नहीं, ऐसा उपाय निकाल लिया गया है। प्राचीन काल में ऋषियों की पाठशालाएँ वृक्षों के नीचे, घास-फूस की कुटियों में चल जाती रहीं, तो कोई कारण नहीं कि इन दिनों वह कार्य टीनशेडों में न चल सके। मँहगी भूमि और इमारती सामान की दसियों गुनी मँहगाई को देखते हुए शांतिकुंज की वर्तमान इमारत को ही तीन मंजिल बना दिया गया है। जहाँ कहीं काम के योग्य जमीन थी, वहाँ टीनशेड खड़े कर दिये गये हैं और ऐसी व्यवस्था बना दी गयी है कि एक वर्ष में एक लाख युग शिल्पियों का शिक्षण किसी प्रकार चल जाया करेगा।

स्थान कम और लक्ष्य बड़ा होने के कारण शिक्षण सत्रों को सिकोड़ कर पाँच दिवसीय बना दिया गया है। पढ़ने-पढ़ाने में तो लंबा समय चाहिए; पर प्राण-प्रत्यावर्तन तो थोड़े समय में भी हो सकता है। देवर्षि नारद कहीं भी ढाई घड़ी से अधिक नहीं रुकते थे; पर इतने में ही वे जिस पर भी हाथ रखते थे, उसी को चैतन्य कर देते थे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को थोड़े ही समय में बला-अतिबला विद्याएँ सिखा दी थीं। इस दृष्टि से अभिनव ५ दिवसीय सत्र-श्रृंखला भी काम चलाऊ परिणाम प्रस्तुत कर ही सकती है।

एक वर्ष में एक लाख अर्थात-दस वर्ष में दस लाख की शिक्षण योजना है। साथ ही जो प्रशिक्षण प्राप्त करें, उन सबके जिम्में यह दायित्व सौंपा गया है कि वे समय दान का क्रम निर्धारित गति से चलाते रहें और दस नये अपने जैसे अपने क्षेत्र में लोकसेवी उत्पन्न करें। इस प्रकार दस वर्षों में वे दस लाख न रहकर एक करोड़ की सीमा के समीप तक पहुँच जायेंगे। आशा की गयी है, नैष्ठिकों का यह वर्ग इंजन के रूप में अगणित डिब्बों को अपने साथ घसीटता ले चलेगा और वह परिकर इतना बड़ा हो जाएगा कि सतयुग की वापसी का आधार बन सके। यह वितान इतने विस्तार में तन सके कि जिसकी छत्र-छाया में पर्याप्त मात्रा में नव सृजन के कर्णधार आवश्यक आश्रय प्राप्त कर सकें।

कहा जा चुका है कि युगसाधना की पूर्णाहुति अब सन् १९९५ और सन् २००० के दो खंडों में होगी। इन्हें एक स्थान पर न करके २४ सौ निजी प्रज्ञापीठों और २४ हजार बिना निजी इमारतों वाले प्रज्ञाकेंद्रों में संपन्न किया जाएगा। हर केंद्र में सौ से लेकर हजार वेदी वाले दीप यज्ञ संपन्न होंगे। इस प्रकार उनकी संख्या भी एक लाख से अधिक हो जाएगी। एक लाख वेदी के गायत्री यज्ञ और एक करोड़ साधकों की संख्या में चलने वाले २४ करोड़ जप का यह महापुरश्चरण सम्मिलित रूप से इतना विशालकाय होगा कि अब तक के धर्मानुष्ठानों में इसे अभूतपूर्व और सतयुग की वापसी के पुण्य पर्व के आगमन का विश्वव्यापी उद्घोष कहा जा सके। आशा की गयी है कि इस आयोजन के संपर्क में आने वालों की संख्या भी करोड़ों-अरबों तक पहुँचेगी। उनका अपना बदलाव और संपर्क क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला परिवर्तन इतना सशक्त होगा कि उस सम्मिलित शक्ति के सहारे नवयुग का अवतरण सर्वथा सार्थक बन पड़े और हम सब इक्कीसवीं सदी के गंगावतरण का-मत्स्यावतार का-प्रत्यक्ष दर्शन आने ही समय में कर सकने में समर्थ हो सकें।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

३२ *शिक्षा ही नहीं विद्या भी*

जो परिजन इस दुर्लभ समय का महत्त्व समझ रहे हैं, वे एक क्षण भी नष्ट किए बिना स्वयं को अग्रदूतों की भूमिका में प्रवृत्त करने को तत्पर हो रहे हैं। नव सृजन की यह बेला अपनी झोली में असीम शक्तियाँ और असाधारण सौभाग्य भरे हुए है। सत्पात्रों को वे अनुदान देने के लिए समय आतुर हो रहा है। इस अवसर का लाभ लेने के लिए आगे बढ़ कर साहस दिखाने वालों के अभिनंदन-प्रशिक्षण के लिए शांतिकुंज पूरी तरह तत्पर है।

❑ ❑

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिशन की पत्रिकाएं

(१) अखण्ड ज्योति (मासिक)

(धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का विज्ञान एवं तर्क-तथ्य-प्रमाण की कसौटी पर खरा चिंतन)

वार्षिक मूल्य-८४.००, आजीवन शुल्क-१५००.०० रुपया।

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २४०३९४०

(२) युग निर्माण योजना (मासिक)

(व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण एवं सात आंदोलनों की मार्गदर्शक पत्रिका)

वार्षिक मूल्य-४२.००, आजीवन शुल्क-७५०.०० रुपया।

पता : युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

(३) युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

(गायत्री महाविज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं युगानुकूल विचार परिवर्तन का मार्गदर्शन)

वार्षिक मूल्य-६५.००, आजीवन शुल्क-१२००.०० रुपया।

पता : युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

(४) प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

(युग निर्माण मिशन के क्रियाकलापों एवं मार्गदर्शन का समाचार-पत्र)

वार्षिक शुल्क-२४.०० रुपया।

पता : शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : ०१३३४-२६०६०२

(५) पाक्षिक वीडियो पत्रिका : युग प्रवाह

(युग निर्माण मिशन के प्रमुख क्रियाकलापों की दृश्य-श्रव्य जानकारी)

वार्षिक शुल्क-१५००.०० रुपया।

पता : शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : ०१३३४-२६०६०२

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.